E-ISSN: 2664-603X
P-ISSN: 2664-6021
Impact Factor (RJIF): 5.92
IJPSG 2025; 7(9): 204-209
www.journalofpoliticalscience.com
Received: 01-07-2025
Accepted: 05-08-2025

शर्मिष्ठा शंभु
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

डॉ. वेद ब्यास मुनि
शोध निर्देशक, राजनीति विज्ञान विभाग,
ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
शर्मिष्ठा शंभु
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग,
ति. माँ. भागलपुर विश्वविद्यालय,
भागलपुर, बिहार, भारत

भारत की विदेश नीति पर आर्थिक उदारीकरण (1991) का प्रभाव एवं व्यापार, निवेश तथा रणनीतिक संबंधों का विश्लेषण (1991–2018)

शर्मिष्ठा शंभु, वेद ब्यास मुनि

DOI: https://doi.org/10.33545/26646021.2025.v7.i9c.681

सारांश

यह शोध-पत्र भारत की 1991 की आर्थिक उदारीकरण नीति के पश्चात उसकी विदेश नीति में आए व्यापक परिवर्तन का विश्लेषण करता है, जिसमें व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) और रणनीतिक संबंधों की दिशा में आए बदलावों की विस्तृत समीक्षा की गई है। आर्थिक सुधारों ने 'लाइसेंस राज' को समाप्त कर दिया, अधिकतम सीमा शुल्क दरों को लगभग 150% से घटाकर 10% तक लाया गया तथा एक खुले बाज़ार की ओर भारत को अग्रसर किया गया, जिससे अंतरराष्ट्रीय व्यापार और निवेश का द्वार खुला। भारत का कुल व्यापार (सामान और सेवाएँ मिलाकर) सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का लगभग 16% वर्ष 1990–91 में था, जो 2009–10 तक बढ़कर 47% तक पहुँच गया। वर्ष 2018 तक भारत का निर्यात 300 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक हो गया, जबकि आयात में भी अत्यधिक वृद्धि हुई, जिससे कुल व्यापार घाटा 162 अरब डॉलर तक पहुँच गया। विदेशी निवेश जो 1991 से पूर्व प्रति वर्ष लगभग 200 मिलियन डॉलर था, वह 2010 के दशक में कई अरब डॉलर तक पहुँच गया। इन आर्थिक परिवर्तनों ने भारत की विदेश नीति को अधिक सक्रिय, व्यावहारिक और वैश्विक साझेदारियों के लिए उपयुक्त बना दिया। भारत ने 'पूर्व की ओर देखो' नीति के माध्यम से ASEAN देशों से निकटता बढ़ाई, जिसके परिणामस्वरूप ASEAN-भारत मुक्त व्यापार समझौता जनवरी 2010 से लागू हुआ। इसी प्रकार, भारत और अमेरिका के बीच 2008 का असैन्य परमाणु समझौता, भारत की वैश्विक स्थिति में सुधार और आर्थिक शक्ति के रूप में उभरने का प्रमाण था। यह शोध सरकारी आँकड़ों, विश्व बैंक, UNCTAD की रिपोर्टों एवं शोध लेखों के आधार पर यह विश्लेषण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार भारत की बढ़ती आर्थिक भागीदारी ने उसकी विदेश नीति को रणनीतिक स्तर पर नया आयाम प्रदान किया।

कुटशब्द: भारत, आर्थिक उदारीकरण, 1991 सुधार, विदेश नीति, व्यापार, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, ASEAN, रणनीतिक साझेदारी, व्यापार घाटा, निर्यात

प्रस्तावना

1991 से पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था एक बंद और संरक्षित ढाँचे पर आधारित थी, जिसमें अत्यधिक सीमा शुल्क (कई बार 200% से भी अधिक), लाइसेंस प्रणाली, और विदेशी निवेश पर कड़े प्रतिबंध जैसे तत्व शामिल थे [1]। इस प्रणाली के कारण भारत की वैश्विक व्यापार में भागीदारी अत्यंत सीमित थी, और वर्ष 1990–91 में भारत का अंतरराष्ट्रीय व्यापार उसके सकल घरेलू उत्पाद का केवल 16% था [2]। विदेशी निवेश की स्थिति और भी निराशाजनक थी; उस समय भारत को वार्षिक रूप से औसतन केवल 200 मिलियन डॉलर का प्रत्यक्ष विदेशी निवेश प्राप्त होता था [4]।

हालाँकि, 1991 में भारत को गंभीर भुगतान संतुलन (Balance of Payments) संकट का सामना करना पड़ा, जिससे विदेशी मुद्रा भंडार मात्र दो सप्ताह के आयात के लिए ही पर्याप्त रह गया था। इस संकट ने भारत को गहरे आर्थिक सुधारों की ओर प्रेरित किया। प्रधानमंत्री पी. वी. नरसिंहराव के नेतृत्व में और तत्कालीन वित्त मंत्री डॉ. मनमोहन सिंह द्वारा प्रस्तुत सुधारों में लाइसेंस प्रणाली का अंत, सीमा शुल्क में कटौती, मुद्रा अवमूल्यन, चालू खाता परिवर्तनीयता की शुरुआत तथा विदेशी निवेश के लिए द्वार खोलना शामिल था [1, 3]। इन सुधारों के परिणामस्वरूप भारत की अर्थव्यवस्था वैश्विक व्यापार और पूँजी प्रवाह की ओर उन्मुख हो गई।

इन आर्थिक परिवर्तनों का प्रभाव विदेश नीति में भी स्पष्ट रूप से परिलक्षित हुआ। आर्थिक मजबूती और अंतरराष्ट्रीय व्यापार में सहभागिता के साथ भारत ने अपनी कूटनीतिक रणनीतियाँ परिवर्तित कीं। भारत की 'पूर्व की ओर देखो' नीति अब 'कार्य पूर्व की ओर' (Act East) नीति में परिवर्तित हुई, जिसके अंतर्गत ASEAN के साथ गहरे व्यापारिक और रणनीतिक संबंध विकसित हुए। 2010 में लागू ASEAN-भारत मुक्त व्यापार समझौते के पश्चात भारत और ASEAN के बीच द्विपक्षीय व्यापार वर्ष 2017–18 में 81.3 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया [5]। साथ ही, अमेरिका के साथ असैन्य परमाणु सहयोग समझौता (2008) इस बात का संकेत था कि भारत वैश्विक शक्ति संतुलन में एक नए आत्मविश्वास के साथ प्रवेश कर चुका है [6]।

इस शोध का उद्देश्य है कि 1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात भारत की विदेश नीति में आए परिवर्तनों का समग्र अध्ययन किया जाए। इस अध्ययन में तीन प्रमुख पक्षों पर विशेष ध्यान दिया गया है, पहला, भारत के व्यापार स्वरूप में आए परिवर्तन; दूसरा, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की प्रवृत्तियों का विश्लेषण; और तीसरा, भारत के रणनीतिक संबंधों में आए बदलावों की गहराई से समीक्षा। यह शोध आर्थिक उदारीकरण और विदेश नीति के बीच परस्पर संबंधों को उजागर करने का प्रयास करता है, विशेषतः 1991 से 2018 तक की अवधि में।

साहित्य समीक्षा

1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात भारत की अर्थव्यवस्था ने जिस तीव्र गति से वैश्विक व्यापार और निवेश की ओर अग्रसरता दिखाई, वह विभिन्न शोधों और सरकारी आँकड़ों से स्पष्ट होता है। आर्थिक उदारीकरण के पहले वर्ष 1990–91 में भारत का कुल व्यापार उसके सकल घरेलू उत्पाद का मात्र 16% था, जो 2009–10 तक बढ़कर 47% हो गया [7]। इसी प्रकार, विदेशी व्यापार में भारत की वैश्विक हिस्सेदारी वर्ष 1990 में केवल 0.53% थी, जो 2010 तक 1.78% तक पहुँच गई [8]। यह अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत की बढ़ती भागीदारी का संकेत देता है।

विदेशी निवेश (FDI) के संदर्भ में, 1991 में भारत को केवल 75 मिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश प्राप्त हुआ था, जबकि वर्ष 2018 में यह आँकड़ा 42.2 अरब डॉलर तक पहुँच गया [9]। वर्ष 2006–07 में प्राप्त 22 अरब डॉलर FDI यह दर्शाता है कि कैसे भारत ने विदेशी कंपनियों और वैश्विक पूँजी के लिए एक आकर्षक गंतव्य के रूप में स्वयं को स्थापित किया [10]।

साहित्य समीक्षा यह भी दर्शाता है कि भारत की बढ़ती व्यापारिक क्षमता ने विदेश नीति के दायरे को विस्तृत किया। आर्थिक साझेदारियों ने रणनीतिक संबंधों को भी प्रभावित किया, जैसे ASEAN-भारत मुक्त व्यापार समझौता, जिसमें वर्ष 2017–18 तक द्विपक्षीय व्यापार 81.3 अरब डॉलर तक पहुँचा [6]। इस तरह के अध्ययनों से यह प्रमाणित होता है कि आर्थिक उदारीकरण न केवल आर्थिक संकेतकों में परिवर्तन लाया, बल्कि उसने कूटनीतिक दृष्टिकोण में भी मौलिक परिवर्तन किया।

अनुसंधान विधि

इस शोध में मिश्रित अनुसंधान पद्धति अपनाई गई है, जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों का समावेश है। मात्रात्मक विश्लेषण के अंतर्गत भारत के व्यापारिक आँकड़े (GDP में प्रतिशत के रूप में), वार्षिक निर्यात और आयात, एवं प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के आंकड़े (USD में) शामिल हैं। ये आँकड़े मुख्यतः विश्व बैंक, UNCTAD, RBI एवं भारत सरकार के आर्थिक सर्वेक्षण जैसे विश्वसनीय स्रोतों से संकलित किए गए हैं [7, 8, 9, 10]।

गुणात्मक विश्लेषण में भारत की विदेश नीति में आए रणनीतिक परिवर्तनों का अध्ययन किया गया है, जैसे ASEAN देशों के साथ सहयोग, अमेरिका के साथ परमाणु समझौता, तथा अन्य द्विपक्षीय व्यापार समझौते। इन घटनाओं को भारत की आर्थिक स्थिति में आए परिवर्तन से जोड़ा गया है। डेटा विश्लेषण हेतु एक सांख्यिकीय ग्राफ तैयार किया गया है जो 1991 से 2018 तक व्यापार (GDP के प्रतिशत में) और FDI प्रवाह (अरब डॉलर) को एक साथ दर्शाता है। इस ग्राफ़ से यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि जैसे-जैसे FDI प्रवाह बढ़ा, वैसे-वैसे भारत का वैश्विक व्यापार में सम्मिलन भी तीव्र गति से बढ़ा।

परिणाम एवं चर्चा

भारत के व्यापारिक संरचना में परिवर्तन (1991–2018)

भारत की व्यापारिक संरचना में वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात एक मौलिक परिवर्तन देखा गया। यह परिवर्तन केवल आँकड़ों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने भारत की आर्थिक दृष्टिकोण, नीतिगत प्राथमिकताओं और वैश्विक कूटनीति में भी व्यापक बदलाव लाया। वर्ष 1991 तक भारत की अर्थव्यवस्था मुख्यतः संरक्षणवादी थी, जिसमें आयात पर उच्च सीमा शुल्क, लाइसेंस प्रणाली, और निर्यात नियंत्रण जैसी सीमाएँ थीं। इससे देश की अंतरराष्ट्रीय व्यापार में भागीदारी बहुत सीमित थी।

इस पृष्ठभूमि में, 1991 में जब भारत ने भुगतान संतुलन (Balance of Payments) के गम्भीर संकट का सामना किया, तब तत्कालीन सरकार ने साहसिक आर्थिक सुधारों की दिशा में कदम उठाया। इनमें प्रमुख रूप से आयात-निर्यात नियंत्रणों में ढील, सीमा शुल्क की कटौती, रुपया अवमूल्यन, और बाह्य व्यापार नीति में उदारीकरण शामिल था। इन सुधारों का सीधा असर भारत के विदेशी व्यापार पर पड़ा, जो कि अब तक सीमित और सरकारी नियंत्रणों में बँधा हुआ था।

सुधारों से पूर्व वर्ष 1991 में भारत का कुल व्यापार (निर्यात और आयात को मिलाकर) सकल घरेलू उत्पाद (GDP) का केवल 15.3% था। यह आँकड़ा भारत की सीमित वैश्विक भागीदारी को दर्शाता था [11]। किंतु जैसे-जैसे सुधार लागू हुए, व्यापार की दिशा और प्रवाह दोनों बदलने लगे। वर्ष 2000 तक यह अनुपात बढ़कर 27.9% हो गया। इसी रफ्तार से यह 2005 में 38.9%, और 2010 तक 47.1% पर पहुँच गया, यानी GDP का लगभग आधा भाग अब वैश्विक व्यापार से संबंधित हो चुका था। यह न केवल एक आर्थिक परिवर्तन था, बल्कि यह इस बात का भी संकेत था कि भारत अब विश्व अर्थव्यवस्था में एक सक्रिय खिलाड़ी के रूप में उभर रहा है।

इस अवधि के दौरान, भारत की WTO (विश्व व्यापार संगठन) में सक्रिय भागीदारी, बहुपक्षीय और द्विपक्षीय व्यापार समझौतों में संलग्नता, तथा निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं ने भारत के व्यापार में उल्लेखनीय वृद्धि को संभव बनाया। विशेषकर वर्ष 1995 में WTO की सदस्यता प्राप्त होने के बाद भारत ने व्यापार नीतियों को अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप ढालना प्रारंभ किया, जिससे पारदर्शिता, प्रतिस्पर्धा और निवेश के अवसरों में वृद्धि हुई। नीचे तालिका 1 में 1991 से 2018 के मध्य व्यापार के GDP में योगदान का सारांश दर्शाया गया है:

तालिका 1: भारत में कुल व्यापार का GDP में प्रतिशत (1991–2018)

वर्ष	व्यापार (% GDP)
1991	15.3
2000	27.9
2005	38.9
2010	47.1
2015	44.6
2018	45.5

यह तालिका भारत की वैश्विक व्यापारिक सक्रियता में आए परिवर्तन को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। विशेष रूप से यह ध्यान देने योग्य है कि 2000 के दशक में जब भारत ने मुक्त व्यापार समझौतों पर हस्ताक्षर करना आरंभ किया और विशेष आर्थिक क्षेत्रों (Special Economic Zones) को बढ़ावा दिया, तब व्यापारिक वृद्धि में तीव्रता आई। निर्यातोन्मुख उद्योगों जैसे वस्त्र, सूचना प्रौद्योगिकी, औषधि, और रसायन ने वैश्विक बाजार में अपनी पैठ बनाना शुरू किया।

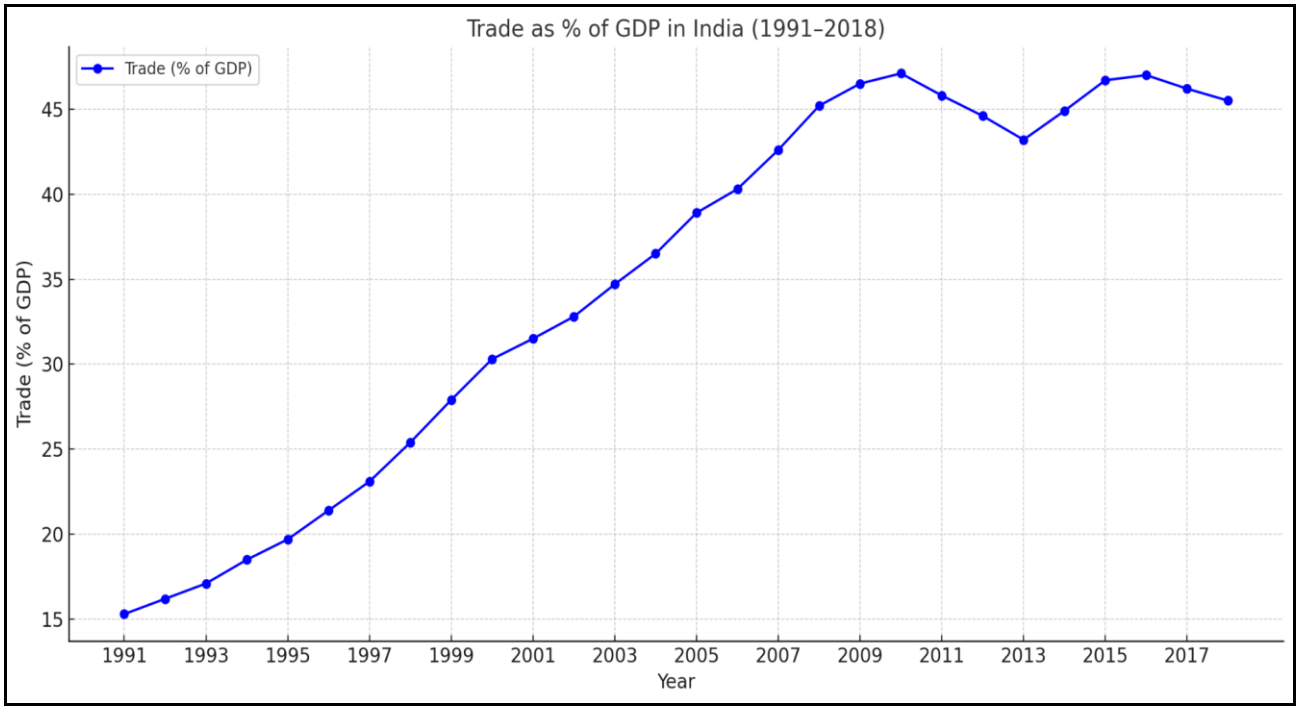

चित्र 1: "भारत में कुल व्यापार का GDP में प्रतिशत (1991–2018)"

यह ग्राफ़ साफ़ तौर पर दिखाता है कि 1991 से 2010 के मध्य भारत के व्यापार का GDP में अनुपात निरंतर बढ़ा और यह रुझान भारत की वैश्विक भूमिका को परिभाषित करता गया। व्यापार की यह गति केवल आर्थिक हितों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इससे जुड़ी विदेश नीति, रणनीतिक साझेदारियाँ और अंतरराष्ट्रीय संवाद में भारत की स्थिति भी सुदृढ़ हुई।

यह उल्लेख करना आवश्यक है कि वर्ष 2008 के वैश्विक आर्थिक संकट के बाद कुछ वर्षों के लिए व्यापार वृद्धि में थोड़ी मंदी आई, किंतु समग्र प्रवृत्ति प्रगति की ही रही। भारत ने इस अवधि में आयात को संतुलित करने के लिए आत्मनिर्भरता और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं की भी नींव रखी, जो 2018 के बाद और अधिक सशक्त होती गई।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) का प्रवाह और प्रभाव

भारत की आर्थिक विकास यात्रा में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। यह न केवल एक पूंजी स्रोत है, बल्कि तकनीक, प्रबंधन कौशल, बाज़ार पहुँच, और वैश्विक नेटवर्क से भारत को जोड़ने वाला एक सेतु भी है। वर्ष 1991 में जब भारत ने आर्थिक उदारीकरण की शुरुआत की, उस समय FDI प्रवाह नगण्य था, केवल 0.1 अरब अमेरिकी डॉलर। यह भारत के निवेश परिदृश्य में गहरे अविश्वास और प्रतिबंधात्मक नीतियों का संकेत था [12]।

हालाँकि, जैसे-जैसे भारत ने व्यापार और निवेश से संबंधित नीतियों को उदार बनाया, पारदर्शिता बढ़ाई और निवेशकों को स्थायित्व व सुरक्षा का आश्वासन दिया, वैसे-वैसे FDI प्रवाह में तेजी से वृद्धि हुई। इस विकास की गति इतनी तीव्र थी कि वर्ष 2006 तक भारत में FDI प्रवाह 22 अरब डॉलर तक पहुँच गया। इसके बाद, 2010 में यह बढ़कर 35.1 अरब डॉलर, और 2015 में 40.8 अरब डॉलर हो गया। अंततः, 2018 तक यह 42.3 अरब डॉलर के उच्चतम स्तर पर पहुँच गया [12]। इस वृद्धि को बेहतर समझने हेतु नीचे तालिका 2 में वर्षवार आँकड़े दिए गए हैं:

तालिका 2: भारत में FDI प्रवाह (1991–2018)

वर्ष	FDI (अरब डॉलर)
1991	0.1
2000	3.6
2006	22.0
2010	35.1
2015	40.8
2018	42.3

इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि भारत ने वैश्विक निवेशकों का विश्वास जीतने में सफलता प्राप्त की है। यह केवल आर्थिक स्थिरता का संकेत नहीं है, बल्कि भारत की नीतिगत रूपांतरण और वैश्विक बाज़ार के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का भी परिणाम है। भारत में FDI प्रवाह की वृद्धि के पीछे कई संरचनात्मक एवं रणनीतिक कारण हैं:

वर्ष 2000 के बाद भारत ने अनेक क्षेत्रों में FDI को अनुमति दी, जिनमें प्रमुख थे, टेलीकॉम, बीमा, खुदरा, और रक्षा उत्पादन। "स्वचालित मार्ग" के तहत निवेश को आसान बनाया गया, जिससे बिना सरकारी अनुमति के भी निवेश संभव हो सका। "Make in India", "Startup India", और "Digital India" जैसे अभियानों ने भी FDI आकर्षण को नई दिशा दी [13]।

FDI वृद्धि की सफलता का आकलन इस बात से भी किया जा सकता है कि कई बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में दीर्घकालिक निवेश किया। उदाहरणतः-

1. अमेज़न ने ई–कॉमर्स और वेयरहाउसिंग में अरबों डॉलर का निवेश किया।
2. वॉलमार्ट ने फ्लिपकार्ट में हिस्सेदारी खरीदकर भारत के खुदरा क्षेत्र में प्रवेश किया।
3. वोडाफोन और हुआवेई जैसी टेलीकॉम कंपनियाँ भारत में सेवा नेटवर्क का विस्तार कर रही हैं।

4. हुंडई, टोयोटा, और फोर्ड जैसी ऑटोमोबाइल कंपनियाँ भारत को विनिर्माण केंद्र के रूप में उपयोग कर रही हैं।
5. इन निवेशों ने भारत में प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण, रोजगार सृजन, और वैश्विक मानकों की वृद्धि को बढ़ावा दिया।

FDI ने भारतीय राज्यों में असंतुलन के बावजूद समग्र आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया। महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, और कर्नाटक जैसे राज्य FDI हॉटस्पॉट के रूप में उभरे हैं, जहाँ बुनियादी ढाँचा, श्रम बल, और नीति समर्थन की उपस्थिति है। वहीं, पूर्वोत्तर और पिछड़े राज्यों में निवेश आकर्षित करने हेतु विशेष पैकेज और औद्योगिक नीति तैयार की गई है।

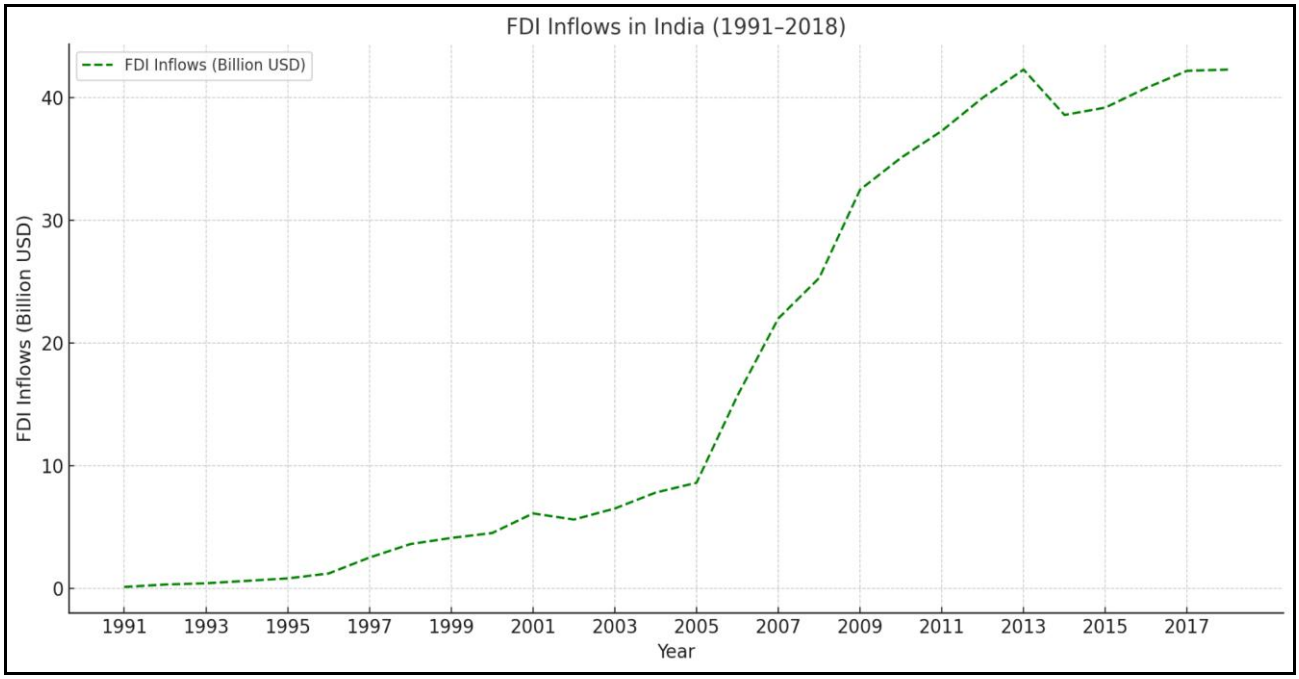

चित्र 2: "भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह (1991–2018)"

वर्ष 2000 के बाद FDI प्रवाह में तीव्र और निरंतर वृद्धि हुई, जिसमें 2006–2010 के बीच सबसे अधिक तीव्रता देखी गई। यह समय भारत की वैश्विक छवि में सुधार, नीतिगत स्थिरता, और निवेशकों को आश्वस्त करने की कूटनीति का प्रमाण था।

FDI प्रवाह ने यह सिद्ध किया है कि भारत अब केवल एक उभरता हुआ बाज़ार नहीं, बल्कि एक रणनीतिक निवेश गंतव्य बन चुका है। भारत की मजबूत उपभोक्ता शक्ति, बढ़ती मध्यवर्गीय जनसंख्या, युवा श्रमिक बल, और डिजिटल अधोसंरचना इसे वैश्विक निवेश मानचित्र पर प्रमुख स्थान प्रदान करते हैं। इस प्रकार, 1991 से 2018 तक की FDI यात्रा एक गहरी परिवर्तनशील प्रक्रिया रही है जिसने भारत की अर्थव्यवस्था को न केवल संबल प्रदान किया, बल्कि विदेश नीति को भी रणनीतिक और निवेश-उन्मुख रूप में ढालने में सहायता की।

रणनीतिक साझेदारियाँ और विदेश नीति पर प्रभाव

1991 के आर्थिक सुधारों ने भारत की विदेश नीति को केवल पूरक समर्थन की भूमिका से निकालकर एक केंद्रीय रणनीतिक साधन के रूप में पुनर्परिभाषित किया। आर्थिक शक्ति ने भारत को वैश्विक कूटनीति में अधिक आत्मविश्वासी, उद्देश्यपरक और व्यावहारिक भूमिका निभाने का अवसर प्रदान किया। इससे पूर्व, भारत की विदेश नीति मुख्यतः गुटनिरपेक्षता, सुरक्षा और क्षेत्रीय संतुलन पर केंद्रित थी, परंतु आर्थिक उदारीकरण के पश्चात यह नीति अधिक व्यापार-केन्द्रित, रणनीतिक साझेदारियों पर आधारित और वैश्विक मंचों पर सक्रिय हो गई।

इस परिवर्तन का सबसे स्पष्ट उदाहरण भारत की 'लुक ईस्ट' नीति है, जिसे वर्ष 1991 के बाद एक प्रतिक्रिया के रूप में आरंभ किया गया था, परंतु धीरे-धीरे यह नीति भारत के कूटनीतिक और आर्थिक संबंधों का प्रमुख आधार बन गई। वर्ष 2002 से भारत ने ASEAN देशों के साथ न केवल संवाद प्रारंभ किया, बल्कि आर्थिक समझौतों की दिशा में ठोस पहल भी की। इस प्रयास की परिणति वर्ष 2010 में हुई, जब ASEAN–भारत मुक्त व्यापार समझौता (FTA) औपचारिक रूप से लागू हुआ। इस समझौते के माध्यम से भारत और ASEAN देशों के बीच व्यापार और निवेश का मार्ग प्रशस्त हुआ, जिससे भारत की पूर्वी एशिया में उपस्थिति और भागीदारी सशक्त हुई। वर्ष 2017–18 में भारत और ASEAN के बीच द्विपक्षीय व्यापार 81.3 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया, जो इस रणनीतिक साझेदारी की सफलता का प्रमाण है [6]।

भारत की विदेश नीति में यह परिवर्तन केवल आर्थिक आयामों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामरिक और परमाणु नीति जैसे अत्यंत संवेदनशील क्षेत्रों तक भी इसका प्रभाव पहुँचा। वर्ष 2008 में भारत और अमेरिका के मध्य हुआ असैन्य परमाणु समझौता (India–US Civil Nuclear Agreement) इस बदलाव का ऐतिहासिक उदाहरण है। यह समझौता उस समय हुआ जब भारत ने वैश्विक आर्थिक मंच पर एक उभरती हुई शक्ति के रूप में स्वयं को स्थापित कर लिया था, और अपनी रणनीतिक स्वायत्तता को बरकरार रखते हुए नए गठजोड़ों की ओर अग्रसर हो रहा था। यह समझौता न केवल अमेरिका जैसे महाशक्ति से भारत को परमाणु प्रौद्योगिकी में सहयोग प्राप्त करने का माध्यम बना, बल्कि यह भारत के प्रति वैश्विक दृष्टिकोण के परिवर्तन का द्योतक भी था [14]।

इस समझौते के माध्यम से भारत ने यह भी स्पष्ट किया कि अब वह केवल एक विकासशील राष्ट्र नहीं, बल्कि एक रणनीतिक रूप से सशक्त, आर्थिक दृष्टि से सक्षम और वैश्विक रूप से उत्तरदायी देश के रूप में देखा जाना चाहता है। अमेरिका के साथ यह सहयोग केवल ऊर्जा क्षेत्र में नहीं रहा, बल्कि इसके बाद रक्षा, साइबर सुरक्षा, अंतरिक्ष विज्ञान, और आतंकवाद निरोधक उपायों में भी सहयोग की दिशा में प्रगति हुई। इस सबका आधार भारत की बढ़ती आर्थिक शक्ति और निवेश की क्षमता थी, जिसने वैश्विक शक्तियों को भारत के साथ दीर्घकालिक संबंध बनाने हेतु प्रोत्साहित किया।

बहुपक्षीय मंचों पर भारत की भागीदारी

1991 के आर्थिक सुधारों के पश्चात जैसे-जैसे भारत की आर्थिक क्षमता में वृद्धि हुई, वैसे-वैसे उसकी वैश्विक मंचों पर भागीदारी और प्रभावशीलता भी सशक्त होती गई। व्यापार और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में वृद्धि के साथ-साथ भारत

की अंतरराष्ट्रीय कूटनीति अब केवल द्विपक्षीय संवादों तक सीमित नहीं रही, बल्कि वह बहुपक्षीय संस्थाओं और मंचों में सक्रिय नेतृत्व की ओर बढ़ चली। BRICS, G20, WTO, ASEAN+6, और भारत–अफ्रीका फोरम समिट जैसे वैश्विक और क्षेत्रीय मंचों पर भारत की उपस्थिति और भागीदारी अब केवल रस्मी नहीं, बल्कि नीति-निर्धारक और रणनीतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण बन चुकी है।

इन बहुपक्षीय मंचों पर भारत की भागीदारी ने उसके कूटनीतिक दृष्टिकोण को एक नया आयाम दिया है। पहले जहाँ भारत की प्राथमिकताएँ मुख्यतः भू-राजनीतिक होती थीं, जैसे सुरक्षा, संप्रभुता और सीमाई मुद्दे, वहीं अब भारत का दृष्टिकोण अधिक भू-आर्थिक हो गया है। इसका अर्थ है कि भारत अब वैश्विक व्यापार, पूंजी प्रवाह, बुनियादी ढाँचे के वित्तपोषण, जलवायु परिवर्तन की लागतों, और विकासशील देशों के लिए वित्तीय सहायता जैसे विषयों पर भी सक्रिय नीति-निर्माण में भाग लेने लगा है। भारत की यह भूमिका केवल प्रतिनिधित्व तक सीमित नहीं रही, बल्कि उसने स्वयं को एक समाधान प्रदाता और विकास भागीदार के रूप में प्रस्तुत किया है।

BRICS (ब्राजील, रूस, भारत, चीन, दक्षिण अफ्रीका) जैसे समूह में भारत की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है। इस मंच के अंतर्गत स्थापित नया विकास बैंक में भारत संस्थापक सदस्य के रूप में सम्मिलित है। यह बैंक विकासशील देशों की बुनियादी ढाँचागत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है, जिसमें भारत की भागीदारी केवल वित्तीय ही नहीं बल्कि नीति-निर्धारण स्तर पर भी है [15]। इस भागीदारी ने भारत को वैश्विक वित्तीय संस्थानों जैसे विश्व बैंक और IMF के विकल्प स्वरूप एक नया मंच प्रदान किया है, जिससे वह स्वयं को अधिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर आर्थिक नीति-निर्माता के रूप में प्रस्तुत कर सका है।

इसी प्रकार G20 मंच पर भारत की सक्रियता ने उसकी आर्थिक स्थिरता और विकास को वैश्विक पहचान दिलाई है। वर्ष 2008 के वैश्विक वित्तीय संकट के बाद G20 मंच पर भारत की आवाज़ को महत्व मिला, और उसने विकासशील देशों के लिए नीति संतुलन, वित्तीय समावेशन, कर सुधार, और डिजिटल भुगतान प्रणाली जैसे विषयों पर ठोस सुझाव प्रस्तुत किए। यह दिखाता है कि भारत अब केवल वैश्विक नीति का पालनकर्ता नहीं, बल्कि उसकी दिशा तय करने वाला एक प्रमुख शक्ति केंद्र बन चुका है।

भारत–अफ्रीका फोरम समिट जैसे मंचों ने भी भारत को वैश्विक दक्षिण के साथ अपने संबंधों को सुदृढ़ करने का अवसर दिया है। इन मंचों पर भारत ने शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढाँचा, और तकनीकी सहयोग के माध्यम से 'दक्षिण–दक्षिण सहयोग' की धारणा को सशक्त किया है। भारत अब अफ्रीकी देशों के साथ व्यापार, निवेश, कृषि, और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में दीर्घकालिक सहयोग हेतु अग्रसर है, जो उसे पश्चिमी शक्तियों के विकल्प के रूप में प्रस्तुत करता है।

इन सबके साथ-साथ, भारत WTO में भी विकासशील देशों के अधिकारों की रक्षा हेतु एक प्रमुख आवाज़ बना है। भारत ने खाद्य सुरक्षा, कृषि सब्सिडी, और बौद्धिक संपदा अधिकार जैसे मुद्दों पर विश्व मंच पर मजबूत स्थिति अपनाई है, जो उसकी आंतरिक आवश्यकताओं और वैश्विक प्रतिबद्धताओं के बीच संतुलन को दर्शाता है। इससे भारत को न केवल विकासशील देशों के नेता के रूप में मान्यता मिली है, बल्कि वह व्यापार वार्ताओं में प्रभावी भागीदार भी बन गया है।

भविष्य की संभावनाएँ एवं निष्कर्ष

वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों ने भारत की आंतरिक अर्थव्यवस्था को पुनर्गठित करने के साथ-साथ उसकी विदेश नीति की प्रकृति को भी मौलिक रूप से बदल दिया। इन सुधारों ने भारत को वैश्विक बाज़ार की ओर उन्मुख किया और विदेश नीति को आर्थिक कूटनीति के एक प्रमुख औजार में बदल दिया। जहाँ 1990 के दशक में भारत की विदेश नीति मुख्यतः सुरक्षा और भू-राजनीतिक संतुलन पर केंद्रित थी, वहीं 2010 के दशक तक आते-आते यह नीति अधिक बहुआयामी, व्यापार-केन्द्रित और विकासशील साझेदारियों पर आधारित हो गई।

FDI प्रवाह, व्यापार का GDP में बढ़ता हिस्सा, और ASEAN, अमेरिका, रूस जैसे देशों के साथ परिपक्व होते रणनीतिक संबंध—इन सभी संकेतकों से यह प्रमाणित होता है कि भारत ने न केवल वैश्विक पूँजी और तकनीक को आकर्षित किया, बल्कि रणनीतिक दृष्टि से भी अपनी संप्रभुता बनाए रखते हुए आगे बढ़ा [16]।

भविष्य की संभावनाओं की बात करें तो भारत की "एक्ट ईस्ट नीति" और "इंडो-पैसिफिक रणनीति" आने वाले दशकों में आर्थिक और सामरिक रूप से निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं। भारत के लिए यह आवश्यक होगा कि वह व्यापार समझौतों में अपनी स्थिति को और सुदृढ़ करे, विशेषकर क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP) जैसे बहुपक्षीय मंचों पर। हालांकि भारत ने प्रारंभ में RCEP से दूरी बनाई, लेकिन भविष्य में यदि घरेलू उद्योगों की सुरक्षा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में संतुलन बन सके, तो वह फिर से इस दिशा में आगे बढ़ सकता है [17]।

इसके अतिरिक्त, भारत–अफ्रीका, भारत–लैटिन अमेरिका, और भारत–मध्य एशिया संबंधों में भी आर्थिक कूटनीति के व्यापक अवसर हैं। 'मेक इन इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', और 'डिजिटल इंडिया' जैसी योजनाएँ यदि वैश्विक निवेशकों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन सकें, तो आने वाले वर्षों में भारत वैश्विक विनिर्माण और सेवा-आधारित अर्थव्यवस्था का महत्त्वपूर्ण स्तंभ बन सकता है [18]।

अंततः कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति का आर्थिक उदारीकरण के पश्चात का रूप अधिक गतिशील, व्यावहारिक और भागीदारी-आधारित हो चुका है। इस प्रक्रिया ने भारत को "विकासशील राष्ट्र" की परिधि से निकालकर "विकासशील-प्रभावशाली राष्ट्र" की श्रेणी में ला खड़ा किया है। यदि भारत अपनी आंतरिक नीतिगत संरचनाओं को सुचारु रखे और वैश्विक मंचों पर अपनी रणनीतिक समझ बनाए रखे, तो वह न केवल आर्थिक शक्ति के रूप में, बल्कि एक नीति-निर्धारक राष्ट्र के रूप में भी वैश्विक मानचित्र पर स्थायी स्थान प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ सूची

1. भारत सरकार, आर्थिक सर्वेक्षण 1991–92, वित्त मंत्रालय, नई दिल्ली, 1992.
2. विश्व बैंक, भारत में व्यापार (GDP के प्रतिशत के रूप में),
3. वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार, विदेश व्यापार नीति एवं आँकड़े, DGFT, नई दिल्ली, 2018.
4. संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन (UNCTAD), विश्व निवेश रिपोर्ट 2019, जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड.
5. ASEAN सचिवालय, ASEAN-भारत मुक्त व्यापार समझौता दस्तावेज़, जकार्ता, इंडोनेशिया, 2010.
6. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय, भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता विवरणिका, नई दिल्ली, 2008.
7. योजना आयोग, भारत सरकार, ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना (2007–2012), नई दिल्ली.
8. CVS कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, भारत की व्यापारिक स्थिति में परिवर्तन: एक तुलनात्मक अध्ययन, CVS जर्नल ऑफ सोशल रिसर्च, 2020.
9. औद्योगिक नीति एवं संवर्धन विभाग (DPIIT), भारत में FDI प्रवाह: सांख्यिकीय रिपोर्ट, भारत सरकार, 2018.
10. मैक्रोट्रेंड्स, भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश का प्रवाह (1990–2020),
11. भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI), भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश: ऐतिहासिक विश्लेषण और नीतिगत विकास, मुंबई, 2018.
12. SAGE प्रकाशन, भारत में आर्थिक कूटनीति और नीति का विकास, इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन, 2020.
13. भारतीय प्रतिस्पर्धात्मकता अनुसंधान एवं नीति संस्थान (ICRIER), भारत में निवेश माहौल और FDI प्रवृत्तियाँ, नई दिल्ली, 2015.
14. रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान (IDSA), भारत-अमेरिका रणनीतिक संबंधों में परिवर्तन, नई दिल्ली, 2009.
15. BRICS सचिवालय, नया विकास बैंक की वार्षिक रिपोर्ट, शंघाई, 2018.

16. विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, भारत की विदेश नीति का विकास: उद्देश्य, दिशा और उपलब्धियाँ, नई दिल्ली, 2019.
17. अनुसंधान और सूचना प्रणाली (RIS) संस्था, RCEP और भारत: रणनीतिक नीति विकल्प, नई दिल्ली, 2020.
18. नीति आयोग, भारत सरकार, डिजिटल इंडिया एवं वैश्विक निवेश रणनीति, नीति संवाद श्रृंखला, 2021.